बोर्डरूम से आगे

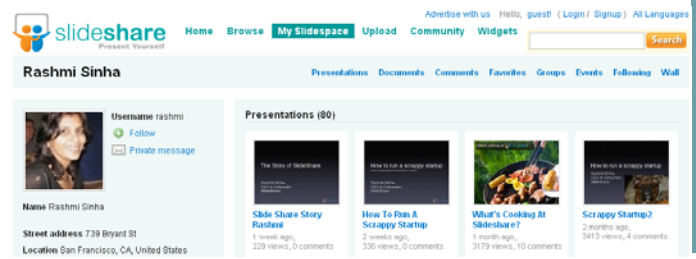

ऋचा वर्मा

इलाहाबाद की धूलभरी सड़कों से लेकर चकाचक सैन फ्रांसिस्को तक के अपने सफर में युवा भारतीय अमेरिकी रश्मि सिन्हा ने तय किया कि वह ज़िंदगी को अपनी शर्तों पर जिएंगीं। वह इंटरनेट स्टार्टअप कंपनी स्लाइडशेयर की सहसंस्थापक और सी.ई.ओ. हैं।

वह कहती हैं, ''मुझे लोगों से मिलना-जुलना अच्छा लगता है। मुझे किसी चीज़ को बनाना पसंद है। मेरे काम में ये सभी चीज़ें शामिल हैं। मैं खुद को सौभाग्यशाली मानती हूं कि मैं उन चीज़ों से धन कमा पाती हूं जिनसे मैं प्यार करती हूं। लेकिन मैं वे काम भी करती हूं जिनमें मुझे आनंद आता है। मेरी जिंदगी में ऐसे कई अवसर आए जब मैं ज़्यादा धन कमा सकती थी या फिर ज़्यादा नियमित कामकाजी ज़िंदगी चुन सकती थी। मैं हमेशा उन्हीं चीज़ों को चुनती हूं जिनमें मुझे ज़्यादा आनंद आता है।''

सिन्हा और उनके अमेरिकी तकनीकीविद पति जोन बुटेले ने यह महसूस किया कि कारोबारी प्रस्तुतियों और स्लाइड शो को कंपनियों के बोर्डरूम से बाहर ले जाने का समय आ गया है और स्लाइडशेयर का उदय उसी का नतीज़ा है। कई तकनीकी साइटों और ब्लॉगों पर इसे ''पॉवरप्वाइंट प्रस्तुतियों की यूट्यूब'' कहकर इसकी प्रशंसा की जाती है। स्लाइडशेयर लोगों को अपनी पावरप्वाइंट प्रस्तुति इंटरनेट पर अपलोड करने की सुविधा देती है। कोई भी इस साइट पर जाकर इन प्रस्तुतियों को डाउनलोड कर सकता है और फिर अपनी साइट या ब्लॉग पर डाल सकता है।

स्लाइडशेयर का संचालन सैन फ्रांसिस्को और नई दिल्ली से किया जा रहा है। सिन्हा के अनुसार, ''इसका इस्तेमाल करने वाले कुल 15 लाख लोग पंजीकृत हैं।''

मनोविज्ञान की शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले ऐसे व्यक्ति के लिए इंटरनेट की ओर झुकना कितना आसान था जिसने ''इलाहाबाद में रहते कभी कंप्यूटर छुआ तक नहीं था?''

वह कहती हैं कि यह जानने पर कि शैक्षिक दुनिया की धीमी गति उन्हें रास नहीं आएगी, उन्होंने अपना रास्ता बदल लिया। अपने ब्लॉग http://rashmisinha.com/ पर वह कहती हैं, ''जब मैं ब्राउन यूनिवर्सिटी में थी... मैंने खुद को अलग-थलग महसूस किया, जैसे किसी आइवरी टॉवर पर होऊं। जब मैंने वेब से नाता जोड़ा और जाना कि किस तरह आप इसके लिए काम कर सकते हैं और लगातार इसकी पुनरावृत्ति करते रह सकते हैं तो यह प्रयोगशाला में बैठकर लोगों पर तय प्रयोग करने से ज़्यादा दिलचस्प लगा।''

सिन्हा ने रोड आइलैंड की ब्राउन यूनिवर्सिटी से मनोविज्ञान में पीएच. डी. की। पहले साल उन्होंने कंप्यूटर विज्ञान के पाठ्यक्रम को भी चुना। उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया, बर्कली में कॉग्नीटिव न्यूरोसांइस पर शोध भी किया। यह जानकर कि उन्हें प्रायोगिक समस्याओं से जूझना अच्छा लगता है, उन्होंने वेब सलाहकार कंपनी यूज़ांटो की स्थापना की और ईबे जैसी कंपिनियों की परियोजनाओं पर काम किया। उत्पादों की दुनिया में उनका पहला काम ग्राहक शोध से संबंधित गेम की तरह के सॉफ़्टवेयर माइंडकैनवस के लिए था जो वर्ष 2005 में जारी किया गया। यही अनुभव बाद में स्लाइडशेयर को विकसित करने के काम आया।

अपने काम और प्रोफ़ेशनल साथियों के प्रति विश्वास का पता इस बात से चलता है कि स्लाइडशेयर के एक मुख्य फ़ीचर की शुरुआत के मौके पर वह सोती रहीं और सुबह उठने पर पता चला कि वह फ़ीचर पहले से ही ''कुछ उत्सुकता जगा रहा है।''

वह कहती हैं, ''जब कोई किसी कंपनी को शुरू करता है, तो ऐसी कंपनी बनाना चाहता है जो खुद से आगे बढ़ जाए। जिसमें स्मार्ट और ज़िम्मेदार लोग हों जो कंपनी का स्वामित्व संभाल लें। मुझे लगता है आखिरकार स्लाइडशेयर के साथ ऐसा हो गया है और यह बहुत ही बढ़िया अहसास है।'' वह उन लोगों में नही जो किनारे पर बैठकर चीज़ों को देखते रहें, उन्होंने तय किया कि वह तकनीकी सम्मेलनों में बहुत ही कम महिलाओं की मौजूदगी, विशेषकर वक्ताओं के बारे में कुछ करना चाहती हैं। इसीलिए स्लाइडशेयर पर हर बुधवार को होमपेज पर महिला वक्ताओं को प्रस्तुत किया जाता है। अपने ब्लॉग पर सिन्हा कहती हैं, ''यदि आप महिला हैं जो सम्मेलनों में वक्ता के रुप में भागीदारी करती हैं- या फिर सम्मेलनों में बोलना चाहती हैं- तो कृपया अपनी प्रस्तुति को स्लाइडशेयर पर अपलोड कीजिए और उसे महिला वक्ता के टैग से संबद्ध कर दीजिए... मैं व्यक्तिगत तौर पर और सार्वजनिक तौर पर इन्हें प्रकाश में लाने के लिए प्रतिबद्ध हूं।'' सिन्हा तकनीकी सम्मेलनों और विश्वविद्यालयों में नियमित रूप से वक्ता के रूप में भागीदारी करती हैं।

रश्मि सिन्हा

सी.ई.ओ., स्लाइडशेयर, कैलिफ़ोर्निया

प्यार है **प्रौद्योगिकी और वेब से**
पसंद है **नई चीजें करना**
प्रेरणा **माता-पिता**

प्रवा सिन्हा

सिन्हा के अनुसार, ''मैंने महसूस किया कि एक नवोदित कंपनी को आगे बढ़ाना मैराथन दौड़ की तरह है न कि फर्राटा दौड़। मैं खुद को बुरी तरह थका नही सकती। इसलिए मैं बीच में विश्राम लेने की कोशिश करती हूं जिससे कि मैं काम को उसी गति से कर सकूं।'' उन्हें इस बात का मलाल है कि वह संगीत सुनने के लिए पर्याप्त समय नहीं निकाल पातीं। हालांकि उन्हें लगता है कि वह कुछ ज़्यादा ही फ़िल्में देखती हैं।

वह कहती हैं कि स्लाइडशेयर को लेकर मेरी दृष्टि साफ है। अपने ब्लॉग पर वह कहती हैं, ''हमने काफी पहले ही यह फैसला कर लिया था कि हम लोगों के प्रस्तुतियों को शेयर करने के तौरतरीकों को बदल देना चाहते हैं और इसी के जरिये एक बड़ी कंपनी बनाना चाहते हैं।''

''मैंने विज्ञान को चुना क्योंकि इसमें मुझे आनंद आता था। मैंने लोगों के अनुभव आधारित डिज़ाइन पर काम किया क्योंकि प्रॉडक्ट डिज़ाइन मज़ेदार काम है। और मैं स्लाइडशेयर को चलाती हूं क्योंकि इस क्षण मैं कहीं और नहीं हो सकती।''

अपने अगले कॅरियर के बारे में वह कहती हैं कि वह एक किताब लिखना चाहती हैं जिसमें सोशल नेटवर्किंग वेबसाइटों पर लोगों द्वारा की जाने वाली अजीबोगरीब चीज़ों का जिक्र हो।

www.slideshare.net/rashmi